वाच्य

परिभाषा :→ वाच्य का शाब्दिक अर्थ है - 'बोलने का विषय'

अतः क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव, उसे 'वाच्य' कहते हैं।

उदाहरण :-

क) मोहन खेल रहा है।

इसमें खेलना क्रिया का कथ्य विंदु है।→ मोहन (कर्ता)

अतः यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

ख) मोहन द्वारा पुस्तक लिखी जा रही है।

इसमें लिखने का कथ्य बिंदु है → पुस्तक (कर्म)

अतः यह कर्मवाच्य वाक्य है।

ग) 'मुझसे खेला नहीं जा रहा।'

इसमें स्वयं खेला जाना' (क्रिया - भाव) ही वाक्य का कथ्य बिंदु है।

अतः यह भाववाच्य वाक्य है।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि वाच्य के तीन भेद हैं :→

क) कर्तृवाच्य
ख) कर्मवाच्य
ग) भाववाच्य

क) कर्तृवाच्य :- जब क्रिया का मुख्य विषय

कर्ता हो अर्थात जब क्रिया का संबंध कर्म और भाव से न होकर कर्ता से होता है, तो वह वाच्य कर्तृवाच्य होता है।
जैसे: बच्चे, रमेश, श्याम

उदा:→ क) बच्चे खेल रहे हैं।

ख) रमेश ने किताब पढ़ ली।

ग) श्याम पत्र लिख रहा है।

कर्तृवाच्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष भी कर्ता के अनुसार लगाए जाते हैं।

जैसे:- क) बच्चा खेल रहा है।
कर्ता क्रिया

इसमें कर्ता और क्रिया दोनों एक व०, पुल्लिंग है।

ख) बच्चे खेल रहे हैं।
कर्ता क्रिया

इसमें कर्ता और क्रिया दोनों बहु व० हैं।

ख) कर्मवाच्य :- जब क्रिया का विषय कर्ता न होकर कर्म होता है, तो वह वाक्य कर्मवाच्य होता है।

अर्थात जहाँ वाच्य केंद्र, अर्थात वक्ता का कथ्य बिंदु कर्म है, जैसे →

Scanned with CamScanner

दूध, दवाई, पतंग

उदा०- क) रमेश से अब दूध पिया नहीं जा रहा है।

ख) दवाई दे दी गई है।

ग) पतंग बहुत अच्छी तरह उड़ रही है।

कर्मवाच्य में क्रिया के लिंग और वचन भी कर्म के अनुसार ही लगाए जाते हैं। जैसे :-

क) मोहन से काम किया जाता है।
कर्म क्रिया

इसमें कर्म और क्रिया एक व० पुल्लिंग हैं।

ख) रोहन द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
कर्म क्रिया

इसमें कर्म और क्रिया दोनों स्त्रीलिंग हैं।

ग) धोबी से कपड़े धोए गए।
कर्म क्रिया

इसमें कर्म और क्रिया दोनों बहु वचन हैं।

इन वाक्यों में या तो कर्ता का लोप हो जाता है या उसके साथ 'से' या 'के द्वारा' का प्रयोग होता है।

Scanned with CamScanner